◆ भारतीय संस्कृति ◆

केन्द्र-बिन्दु एवं विलक्षण तत्त्व क्या हैं?

डॉ. शिवकुमार ओझा

Scanned by CamScanner

विषय सूची

क्रमांक		विषय	पृष्ठ संख्या
		प्राक्कथन	**3**
1.		**विषय प्रवेश**	**6**
2.		**भारतीय संस्कृति का केन्द्र बिन्दु**	**9**
	2.1	स्वरूप का साक्षात्कार कराना	9
	2.2	पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति	10
	2.3	बन्धनों से मुक्त कराना	10
	2.4	अध्यात्म के चरमोत्कर्ष पर स्थापित करना	10
3.		**भारतीय संस्कृति के विलक्षण तत्त्व**	**12**
	3.1	सांस्कृतिक महानता एवं विलक्षणता की व्याख्या	12
	3.2	भौतिक संस्कृति समझने में सरल किन्तु बहुत अपूर्ण	13
	3.3	भारतीय संस्कृति की विलक्षणता का प्रारम्भिक "बीज"	14
	3.4	भारतीय संस्कृति की विलक्षणता का रूप	14
	3.5	सार-तत्त्व का ज्ञान कराने में भारतीय संस्कृति की विलक्षणता	16
	3.6	जीवन की पूर्णता के दृष्टिकोण में भारतीय संस्कृति की विलक्षणता	17
	3.7	जीवन प्रणाली को स्थिरता (Stability) प्रदान करने में विलक्षणता	18
	3.8	सनातन होने में भारतीय संस्कृति की विलक्षणता	20
4.		**भौतिकवादियों की शंका तथा उसका समाधान**	**24**

Scanned by CamScanner

5.	**भारतीय सांस्कृतिक ज्ञान के अवरोधक**	**25**
5.1	सदा भौतिक ज्ञान एवं कार्यों में प्रवृत्त रहने से उत्पन्न दोष	26
5.2	धन और प्रसिद्धि कमाने के कार्यों में व्यस्त रहना	28
5.3	विषय-भागों में मनुष्य का लिप्त हो जाना	29
5.4	बुद्धि एवं इन्द्रियों को सर्वज्ञ मान बैठने का पूर्वाग्रह	30
5.5	सत्संग का अभाव होना, जिसके कारण निष्ठा नहीं	30
5.6	आधुनिक पारमार्थिक मनुष्यों में आदर्शों का अभाव	31
5.7	आध्यात्मिक ज्ञान के शब्दों का प्रचलन भौतिक जगत में न होना	31
5.8	आध्यात्मिक विषय का साहित्य अप्रचलित संस्कृत भाषा में होना	32
5.9	आधुनिक पढ़े-लिखे मनुष्यों द्वारा भ्रम फैलाना	32
5.10	स्वाभिमान के ह्रास से हीन भावना का समावेश	33
5.11	अनुभूति से प्राप्त तथ्यों में तर्क की गति न होना	34
5.12	सूक्ष्मतर व सूक्ष्मतम पदार्थों की खोजों के लिए अनूठे उपाय	35
5.13	श्रद्धा का अभाव	36
5.14	अपने भीतर न झाँकने की आदत	38
5.15	संकीर्ण दृष्टिकोण के विचार दृढ़ हो जाना	39

****

Scanned by CamScanner

प्राक्कथन

"भारतीय संस्कृति" शब्द से हमारा तात्पर्य वैदिक संस्कृति, सनातन धर्म, हिन्दू धर्म है। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप दिन-प्रतिदिन, समय-समय, जगह-जगह पर होते रहते हैं। व्यक्तिगत घरों में अथवा सामूहिक स्थानों में आर्तियाँ, पूजा-पाठ, पठन-पाठन, ध्यान, योग, प्राणायाम, मंत्र-जप, तंत्र, पौराणिक कथाएँ, आध्यात्मिक प्रवचन इत्यादि होते रहते हैं। इनके अतिरिक्त मंदिरों के दर्शन, तीर्थ यात्राएँ, पवित्र नदियों में स्नान, पवित्र सरोवरों या कुंडों में स्नान, त्योहारों का मनाना, तप, मौन धारण, मेलों का आयोजन इत्यादि क्रियाकलाप भी जगह-जगह और समय-समय पर होते ही रहते हैं। अतः जनसाधारण के मन में प्रश्न हो सकता है कि ये सब क्या केवल मनोकामनाओं की पूर्ति के लिये ही है अथवा इन सब का कोई उच्च ध्येय भी होता है। यह उच्च ध्येय क्या है, केन्द्र-बिन्दु क्या है क्यों है, किस प्रयोजन के लिये है, इन प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत पुस्तक में दिया गया है।

मनुष्य की बुद्धि के तीन दोष हैं- 1. मल (राग, द्वेष, लोभ आदि वासनाएँ), 2. विक्षेप (मन की चंचलता, मन का स्थिर न रहना, कभी कुछ चाहना और कभी अन्य कुछ चाहना), 3. आवरण (कुछ-का-कुछ समझ लेना, उलटा-पुलटा समझना)। सांसारिक मनष्य की बुद्धि सीमित सामर्थ्य वाली होती है। संसार में जो अनुभव सरलता से होते हैं तथा सत्य प्रतीत होते हैं, यह आवश्यक नहीं कि वे पारमार्थिक रूप से भी सत्य हों। सांसरिक पदार्थ आया-जाया करते हैं, उत्पन्न व विनष्ट हुआ करते हैं, स्थिर नहीं रहते। अतः संसार में ऐसा तत्त्व अवश्य ही होना चाहिए जो इन सब सांसारिक दृश्य प्रदार्थों का द्रष्टा हो, अधिष्ठान हो तथा सदा विद्यमान रहता हो। ऐसा तत्त्व है किन्तु वह पारमार्थिक है। इस पारमार्थिक पदार्थ का यथार्थ ज्ञान होना तथा उसे प्राप्त करना भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत मनुष्य का परमध्येय (परमपुरुषार्थ) है, यही भारतीय संस्कृति का केन्द्र-बिन्दु है जिसे प्रस्तुत पुस्तक के प्रारम्भ में विभिन्न रूपों में समझाया गया

Scanned by CamScanner

है। साथ में इस पर भी विचार किया गया है कि मानव-जीवन के लिये यह केन्द्र-बिन्दु किस प्रयोजन से है अर्थात् क्यों है।

हम भारतीय प्रायः कहा करते हैं कि भारत महान् है, भारतीय संस्कृति सर्वश्रेष्ठ है। इतना कहना ही पर्याप्त नहीं, इसके कारणों को भी हमें समझना होगा। भारतीय संस्कृति केवल महान् या सर्वश्रेष्ठ ही नहीं अपितु विलक्षण भी है। भारतीय संस्कृति की विलक्षणता ने ही भारतीय संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ बनाया है। यह विलक्षणता हमारे ऋषियों के अद्वितीय विचारों में निहित है जिसने भारतीय सांस्कृतिक ग्रन्थों व शास्त्रों के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभायी है। ये विलक्षण विचार तथा उन विचारों के अन्तर्गत क्रियाकलाप ऐसे हैं जिसे सांसारिक मानवीय बुद्धि द्वारा सोच पाना सम्भव नहीं। सांसारिक मानव बुद्धि के परे होने के कारण ही हमने इन विचारों को विलक्षण कहा है। प्रस्तुत पुस्तक ऐसे ही कुछ विलक्षण तत्त्वों (विचारों) का परिचय देती है।

विचारों की विलक्षणता के कारण बहुत से विचार प्रायः गूढ़ एवं सूक्ष्म हैं जिन्हें जनसाधारण के लिये समझना कठिन प्रतीत होता है। आधुनिक मान्यताओं में दृढ़ विश्वास, आधुनिक जीवनशैली के प्रति आकर्षण तथा अन्य अनेक बातें हैं जो भारतीय संस्कृति समझने के अवरोधक हैं (अर्थात् रुकावट पैदा करते हैं)। इन अवरोधक तत्त्वों को भी प्रस्तुत पुस्तक के अन्तिम भाग में विस्तार से समझाया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक के अन्त में आवरण पृष्ठ पर जिन सभी हमारी भारत में छपी पुस्तकों का उल्लेख है उन सभी के अब नवीन संस्करण के प्रकाशक स्वयं लेखक हैं तथा मुद्रक ''त्रिकोण बुक्स'' हैं। अतः प्रस्तुत पुस्तक इस प्रकाशन का प्रथम संस्करण है। प्रस्तुत पुस्तक मूलतः हमारी बृहद् पुस्तक (जिसका शीर्षक है- ''भारतीय संस्कृति महान् एवं विलक्षण'') का एक अति लघु अंश है। विषय के महत्व को देखते हुए तथा पुस्तक का मूल्य अधिक न होने देने के कारण

Scanned by CamScanner

प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। आशा है यह पुस्तक पाठकों के लिये अवश्य ही उपादेय होगी, भारतीय संस्कृति समझने में सहायक होगी। शेष हरि इच्छा है।

– शिवकुमार ओझा

****

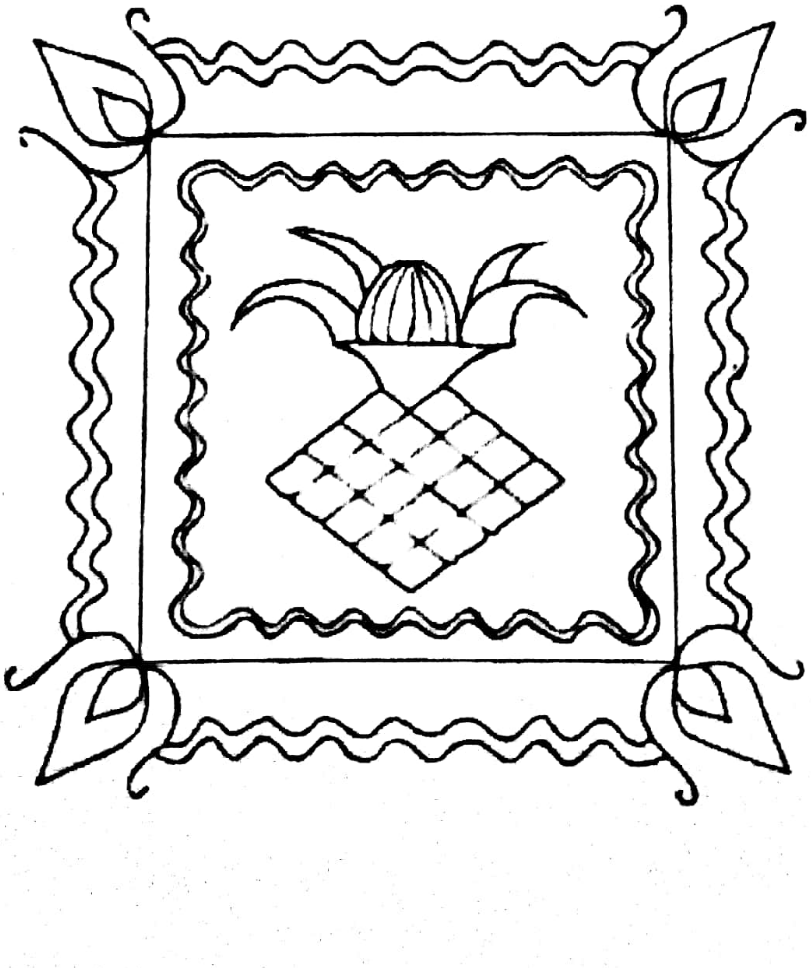

Scanned by CamScanner